रोहतक में विराट युवा सम्मेलन

3 नवम्बर 2002 को रोहतक के दयानन्द मठ में युवकों का एक विशाल सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में परिषद् के अध्यक्ष श्री जगवीर सिंह एडवोकेट व परिषद् के महासचिव श्री विरजानन्द जी के प्रयास से आयोजित किया गया। परिषद् के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी और संस्थापक महासचिव स्वामी अग्निवेश जी इस अवसर पर उपस्थित थे। स्वामी इन्द्रवेश जी कुछ दिन पूर्व ही लगभग साढे तीन महीने की विदेश यात्रा पूरी करके भारत लौटे थे। स्वामी जी ने अमेरीका व इग्लैंड के प्रवास काल में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार एवं योग शिविरों का आयोजन किया था। इस दिन रोहतक में आर्य युवकों के बड़वानल की उत्तंग तरंगों ने आर्य राष्ट्र बनायेंगे के समाघोष लगा कर गगन गुंजा रखा था। युवक-युवतियों के जत्थे जोश-खरोश के साथ समवेत स्वर से नारेबाजी करते हुए वातावरण में उत्साह और जोश भर रहे थे जिसे देखकर आर्य बुजुर्गों का दिल बल्लियों उछल रहा था और इस झूठे प्रचार को नकार रहा था कि आर्य समाज में युवा शक्ति आने से परहेज कर रही है। इस युवा शक्ति को देख आर्य समाज के उज्ज्वल भविष्य की गारंटी दर्शकों को मिल रही थी। सीमित साधनों के बल पर मात्र एक सप्ताह की तैयारी ने यह चमत्कार दिखाया जिस पर सहज में विश्वास करना कठिन था लेकिन सच यही था। हरियाणा के कोने-कोने से पधारे युवक-युवतियाँ यहाँ दिखाई दे रहे थे। आर्य समाज के ऐसे बुजुर्गों की संख्या भी यहाँ कम नहीं थी जो अपने को इन युवकों से किसी भी मायने में कम नहीं समझते थे। इन बुजुर्गों पर परिषद् के संस्कारों की झलक साफ नजर आ रही थी।

प्रातः 8.00 बजे यज्ञ से प्रारम्भ युवा सम्मेलन का कार्यक्रम सायं 4.30 बजे तक चला और 8.30 घंटे की इस अवधि में भीड़ कम होने के बजाये निरन्तर बढ़ती ही गई। प्रातः यज्ञोपरांत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ क्योंकि आज महीने का पहला रविवार था और पहले रविवार को पिछले चार वर्ष से स्वामी जी की प्रेरणा से नियमित सत्संग होता आ रहा था जिसमें आसपास के सैकड़ों लोग भाग लेते रहे हैं। प्रवचन के पश्चात मुख्य पण्डाल में कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। श्रीमती पुष्पा शास्त्री के ओजस्वी उद्घाटन भाषण और रामनिवास आर्य के जोशीले भजनों ने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष कैप्टन अभिमन्यु (सम्पादक-हरिभूमि) ने इस विराट युवा सम्मेलन को युवा-हृदयों पर स्थायी प्रभाव छोड़ने वाला सम्मेलन करार दिया। उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश जी का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। श्री रामधारी शास्त्री (स्वामी रामवेश) ने हरियाणा की युवा-शक्ति का आह्वान किया कि दूरदर्शन पर परोसी जा रही अश्लीलता और पाश्चात्य अपसंस्कृति के आकर्षण में आज की युवा पीढ़ी जिस तेजी से फंसती जा रही है उसका जवाब सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् ही हो सकती है अतः परिषद की इकाईयाँ हरियाणा के हर नगर, कस्बे और गाँव में स्थापित होनी चाहिएँ जिससे युवकों को अच्छे संस्कारों से दीक्षित किया जा सके। श्री राममेहर एडवोकेट ने आर्य समाज की युवा पीढ़ी को एकाग्रचित्त एवं उत्साह से कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि ये युवक ही आर्य समाज की नींव हैं जो इसके उज्ज्वल भविष्य का संकेत दे रहे है। भाई जगवीर सिंह जी इस नींव को मजबूत बनाने में पिछले 25 साल से घोर संघर्ष और तपस्या कर रहे हैं। उनका अपना व्यक्तित्व एवं कृतित्व इतना आदर्श है कि युवा शक्ति बरबस ही उनकी ओर आकर्षित हो जाती है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री डॉ0 रामप्रकाश ने युवाओं को वैदिक सिद्धान्तों के अध्ययन व आचरण का परामर्श दिया। उन्होंने कहा आर्य जन्म से पैदा नहीं होता बल्कि आर्यत्व के संस्कारों में दीक्षित होकर आर्य बनता है। राम मन्दिर के नाम पर शिलापूजन को घटिया व खतरनाक मूर्तिपूजा निरूपित करते हुए उन्होंने कहा कि आर्य समाज को इस पौराणिक ढोंग से दूर रहना चाहिए। आर्य समाज को संगठित होकर काम करने व आपसी मन-मुटाव मिटा कर देश व समाज का नेतृत्व करने का परामर्श दिया। भ्रष्ट सरकारों पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने इन सरकारों को देश के लिए घातक बताया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् को आर्य समाज की रीढ़ बतलाते हुए उन्होंने इस संगठन को सक्रिय व सशक्त बनाने तथा पूरे देश में फैलाने का आह्वान किया। पत्रकारिता के पुरोधा, प्रखर वक्ता एवं आर्य मनीषी डॉ0 वेद प्रताप वैदिक ने इस अवसर पर स्वाधीनता आन्दोलन में महर्षि दयानन्द

और आर्य समाज की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज की भ्रष्ट सरकारें उस स्वाधीनता पर कलंक हैं और इस कलंक को आर्य समाज के सिवाय कोई दूसरा संगठन नहीं धो सकता इसलिए भ्रष्ट तन्त्र आर्य समाज को भीतर ही भीतर खत्म करने की साजिशों को अंजाम दे रहा है। देश की युवा शक्ति आर्य समाज के संस्कारों में दीक्षित होकर मैदान में उतरे तो समाज का कायाकल्प एक हकीकत बन सकती है।

स्वामी अग्निवेश जी ने महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि- 'दयानन्द मठ का यह वही स्थान है जहाँ आज से 32 साल पहले मेरा व स्वामी इन्द्रवेश जी का दोबारा जन्म हुआ था अर्थात् हम दोनों ने संन्यास की दीक्षा ली थी। यह कदम हमने भरी जवानी में वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होने पर नहीं उठाया था बल्कि समाज को बदलने के अपने संकल्प को मूर्तरूप देने के लिए उठाया था। आयोजकों को मैं साधुवाद देना चाहूँगा कि संन्यास दीक्षा वाले दिन जो भीड़ यहाँ जुटी थी उसी की पुनरावृत्ति कर हमारी पुरानी उमंग, जोश और संकल्प को आज फिर से जिंदा कर दिया है। समाज को बदलने का हमने आजीवन प्रयास किया लेकिन आर्य समाज में ही कुछ ऐसे तत्व पैदा हो गये जिन्होंने हमारे रास्ते में कांटे बिछाने में ही अपनी श्रेष्ठता, अपना आर्यत्व सिद्ध करने का प्रयास किया। संन्यास दीक्षा समारोह में जिन हाथों से हमें आशीर्वाद दिया गया था वे खड़ग-हस्त बन गये। अशक्त होकर भी वे युवा शक्ति के लिए कुर्सियां छोड़ने को तैयार नहीं थे इसलिए बार-बार हमें आर्य समाज से निष्कासित कर हमारे संकल्प को, हमारी उमंग को, हमारे जोश को कुचला जाने लगा। लेकिन हम साफ नीयत से एक साफ उद्देश्य के लिए काम करते रहे और लोगों का विश्वास, प्रेम और सहयोग हमें मिलता रहा। आज का यह जनसमूह इसकी पुष्टि स्वतः कर रहा है। देश की युवा शक्ति से मैं कहना चाहूँगा कि समाज को बदलने व उसका कायाकल्प करने का अदम्य साहस युवक-युवतियाँ ही दिखा सकती हैं अतः उन्हें संगठित होकर इस दिशा में काम करना होगा। देश व समाज जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण और नारी उत्पीड़न की सात महामारियों से ग्रसित है, आहत है, क्षत-विक्षत है अतः इन्हें चुनौती मानकर स्वीकार करना होगा। दहेज प्रथा और भ्रूण हत्या को समाज का कोढ़ करार देते हुए स्वामी जी ने कहा कि देश की युवा-शक्ति ही जाग्रत और सक्रिय होकर इनका उन्मूलन कर सकती है। हरियाणा की चौटाला सरकार द्वारा कैसिनों (जूआघर) खोलने की नीति की जमकर आलोचना करते हुए स्वामी जी ने कहा कि बाप ने हरियाणा को शराब पिलानी सिखाई और बेटा जूआ खेलना सिखा रहा है तो हरियाणा का भविष्य कैसे उज्ज्वल बनेगा? खेद की बात यह है कि ये काम वहाँ हो रहे हैं जिसे आर्य समाज का गढ़ माना जाता है। झज्जर के पास दुलीना गांव में पाँच दलितों को गोहत्यारा प्रचारित कर पुलिस की मौजूदगी में भीड़ द्वारा हत्या की जाने की घटना की निन्दा करते हुए उन्होंने कहा कि अपराधियों को कानून अपने हाथ में लेने व उसका दुरुपयोग करने की सजा मिलनी ही चाहिए। उन्होंने समाज में सद्भाव एवं सौहार्द का वातावरण बनाने के लिए मुस्लिम, ईसाई, सिखों को आर्य समाज का सदस्य बनाने पर भी बल दिया।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्य समाज का आह्वान किया कि 'आर्य राष्ट्र' के निर्माण का पथ हम सभी को मिल कर प्रशस्त करना चाहिए। 'आर्य सभा' का जो प्रयोग इस निमित्त हमने किया था, हमारे उस प्रयास को, हमारे ही कुछ भाइयों की रणनीति ने विफल कर दिया। लेकिन 'आर्य राष्ट्र' का लक्ष्य हमारी आँखों से कभी ओझल नहीं होना चाहिए। अपने जीवन को 'आर्यत्व' से मण्डित करके भी इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन जिस तेजी से संस्कार, स्वाध्याय, साधना, पंच महायज्ञ, ब्रह्मचर्य, आश्रम व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था हमारे जीवन से निष्कासित होती जा रही है उससे लगता है कि यह प्रयोग भी 'आर्य सभा' की तरह विफल होता जा रहा है। हमें विश्लेषण करना होगा कि ये दोनों प्रयोग क्यों सफल नहीं हुए और अब हमें क्या कदम उठाने हैं। आज का आर्य समाज फूट के महारोग का शिकार है और इसका मूल कारण है पदलिप्सा, अवसरवाद, परिसम्पत्तियों के दोहन की प्रवृत्ति, भ्रष्ट चुनाव व्यवस्था, मुकदमेबाजी, विजातीय तत्वों का संगठन में अबाध प्रवेश और चरित्र हनन के कुत्सित प्रयास। ये सभी बुराइयाँ एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं, एक दूसरे को जन्म देती हैं, एक दूसरे की सहायक बनती हैं, एक दूसरे को आश्रय देती हैं अतः इस समूचे भ्रष्ट तन्त्र को खत्म करने की महती आवश्यकता है जिसे युवा शक्ति ही खत्म कर सकती है। इस कार्य में बूढ़ा

नेतृत्व युवा शक्ति को केवल अपना आशीर्वाद, प्रेरणा, मार्गदर्शन ही दे सकता है। हमारा प्रयास सदैव यही रहेगा कि आर्य समाज का संगठन हर दृष्टि से मजबूत बने, सक्रिय बने, प्रभावशाली बने। इसी निमित्त हम समय-समय पर एकता गोष्ठियों का और बुद्धिजीवी गोष्ठियों का आयोजन करते रहे हैं। स्वामी इन्द्रवेश जी ने इस अवसर पर युवकों से संकल्प भी कराया जो निम्न प्रकार हैः-

मैं ईश्वर को साक्षी करके संकल्प लेता हूँ किः-

1. अपनी शादी में दहेज नहीं लूँगा और दहेज विरोधी अभियान में अपना सक्रिय योगदान दूँगा।

2. जीवन में कभी न रिश्वत लूँगा और सदैव रिश्वत लेने वालों का विरोध करूँगा।

3. शराब, सुल्फा, गांजा, स्मैक, अफीम, चरस आदि घातक नशों से सदैव अपने आपको दूर रखूँगा तथा इनके विरुद्ध चलाये जाने वाले अभियान में सक्रिय सहयोग करूँगा।

4. कन्या भ्रूण हत्या एक जघन्य पाप है, इसके विरुद्ध चलाये जाने वाले अभियान में सक्रिय रूप से भाग लूँगा।

ईश्वर से प्रार्थना है मेरे ये संकल्प पूरे हों।

इस विराट आर्य युवा सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित हुआ कि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आयोजित यह युवा सम्मेलन देश में धर्म के नाम पर बढ़ते पाखण्ड, नशाखोरी, दहेज, जातिवाद, भ्रूण हत्या एवं भ्रष्टाचार इत्यादि पर गहरी चिन्ता प्रकट करता है और हरियाणा के छात्र-छात्राओं, गुरुजनों एवं बुद्धिजीवियों का आह्वान करता है कि क्रान्तिद्रष्टा महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेकर हम सभी गाँव-गाँव में वैचारिक क्रान्ति की मशाल जलायें एवं कुरीतियों को दूर भगायें।

इस प्रस्ताव में 'डेरा सच्चा सौदा' की धर्मविरोधी गतिविधियों का उल्लेख करते हुए कहा गया कि इन गतिविधियों के कारण हरियाणा तथा उसके पड़ौसी प्रांतों की जनता के बीच वैमनस्य फैल रहा है जिस पर तुरन्त रोक लगनी चाहिए। सिरसा के आर्य पत्रकार श्री रामचन्द्र छत्रपति पर डेरा सच्चा सौदा द्वारा किये गये कातिलाना हमले की भर्त्सना करते हुए कहा गया कि आर्य समाज इस पटना को गम्भीरता से लेते हुए श्री छत्रपति के साथ खड़ा है और आर्य युवक सिरसा के डेरा सच्चा सौदा के काले कारनामों के विरुद्ध दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान में जनजागरण अभियान चलायेंगे। प्रस्ताव में हरियाणा में बढ़ती नशाखोरी व जुआघरों की स्थापना का घोर विरोध करते हुए जहाँ हरियाणा की चौटाला सरकार की भर्त्सना की गई वहाँ प्रदेश के महामहिम राज्यपाल बाबू परमानन्द से बलपूर्वक आग्रह किया गया कि शराब के ठेकों और कैसिनों पर रोक लगवायें। 15 अक्टूबर 2002 को दुलीना (झज्जर) में पाँच दलितों की हुई निर्मम हत्याओं को समाज पर कलंक निरूपित करते हुए आर्य समाज व इसकी युवा शक्ति का आह्वान किया कि ऐसी नृशंस घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो ऐसा संकल्प ले। समता मूलक समाज और आर्य राष्ट्र के निर्माण की दिशा में सक्रिय होने का आह्वान भी इस प्रस्ताव में किया गया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् ने इस अवसर पर अपने आगामी कार्यक्रम की घोषणा करते हुए कहा कि आगामी छह माह में ऐसे सम्मेलन सोनीपत, झज्जर, फरीदाबाद, जीन्द, कैथल और भिवानी में भी आयोजित किये जायेंगे। दिसम्बर माह में सौ युवकों का वैचारिक व शारीरिक प्रशिक्षण शिविर लगाया जायेगा। हरियाणा को दस जोनों में बाँट कर संगठन द्वारा लिये गये निर्णयों को प्रचारित किया जायेगा।

इस पूरे आर्य युवा महासम्मेलन की प्रेरणा स्वामी इन्द्रवेश जी से ही प्राप्त की गई थी और घोषित आगामी कार्यक्रम में उनका ही मानस झलक रहा था।

इस विराट युवा सम्मेलन को 'हरि भूमि', दैनिक जागरण, दैनिक ट्रिब्यून, दैनिक भास्कर आदि में अच्छी कवरेज मिली।